युद्ध और हिंसा का नर्तन हो रहा है। मनुष्य का संहार ऐसे हो रहा है... मानो करूणा, प्रेम, बंधुत्व-सब जीवन से विदा हो गये हों। 'निर्भय' शीर्षक का यह काव्य-बंध इसी भद्दे सच की अभिव्यक्ति है कि यह मनोहरा पृथ्वी मनुष्य के वध-स्थल में बदल गई हैः-

प्रत्येक मनुष्य के लिए
था भय अंगुलिमाल
आखिरकार मिल ही गया
एक निर्भय से
जिसने कहा
कि जाओ
अभय हो जाओ
इस निर्भय को था ज्ञात
कि भय से भय को मारने पर
बचता भय ही
और भय से
जनमता भय ही
हजारों साल बाद, आज भी
भय से है
सबसे अधिक भय
और अपने यहां
आदमी को
आदमी से भय
भय से युद्धोन्मत हैं देश
(पृष्ठ-41)

कवि राजन की जीवन-दृष्टि के स्थान में व्यापक जीवनानुभव और गहरी संवेदनशीलता की बड़ी भूमिका है तभी वह कवि और कविता को लिखन्त से निकालकर एक नया आयाम प्रदान करते हैं। मेरा आशय इस संग्रह की 'कवि' शीर्षक कविता से है। 'बुद्ध' जैसे व्यक्ति का जब रूपान्तरण होता है तो वह मनुष्य के ऐसे मुक्तिदाता बन जाते हैं कि सृष्टि की सारी कोमलता उनमें पूंजीभूत हो उठती है, सारी सुन्दरता उनमें रूपाकार हो लेती है, इसीलिए न लिखकर भी सबसे सच्चे कवि हो जाते हैं-

आपकी एक-एक मुद्रा
आपकी छवि कविता
आपकी बोली
आपकी ठिठोली
आपकी हंसी
आपकी अनथक यात्रा
यहां तक कि सुस्ताना कविता
आपके नयन जब निहारते
जब निःशब्द रोम-रोम से श्रवण करते आप
जब आप विचारते
हे कवि!
आपके लिए, यह संसार कविता
और संसार के लिए
आप कविता
(पृष्ठ-35)

'सिद्धार्थ से संबुद्ध' बनने की अन्तर्यात्रा कितनी दीर्घ और मारक रही होगी, यह इन कविताओं की अन्तर्यात्रा से स्पष्ट जरूर होता है लेकिन उसकी प्रतीति तो किसी सच्चे साधक को ही हो सकती है। कर दिया/भोग का त्याग/जिस दिन किया गृहत्याग/यह तो यात्रा की शुरूआत भर थी लेकिन यात्रा की परिसमाप्ति होती है-

भोग और त्याग की रस्सी
रहती राग के हाथ
घूम-फिर आता रहता
कभी भाग, कभी त्याग
सिद्धार्थ ने त्यागा भोग
और जिस दिन किया त्याग का त्याग
बन गये बुद्ध
सम्यक् संबुद्ध।
(पृष्ठ-79)

हिन्दी में गुप्त जी की 'यशोधरा' से लेकर अन्य अनेक कविताएं बुद्ध पर केन्द्रित है और बेनीपुरी (तथागत) से पहले प्रसाद के अजात शत्रु जैसे नाटक भी हैं। प्रश्न है कि इस युवा कवि को बुद्ध ने ही क्यों प्रेरित अनुप्राणित किया? प्रसाद और बेनीपुरी के युग की तुलना में आज का पूंजीवादी साम्राज्यवादी समय मनुष्य और मनुष्यता के लिए अधिक बर्बर और हिंसक है। सदगुण-संवेदना के सभी उत्सों पर महत्वाकांक्षी राष्ट्राध्यक्षों के द्वारा लगातार हमले हो रहे हैं। ऐसे भयावह समय में ग्लोब के हर कोने में राजन जैसे कवि-लेखक हैं, जो बुद्ध जैसे मसीहों के पास जाकर कुछ लेकर लौटते हैं जिसकी आज सख्त जरूरत है।

राजन जी की काव्य-भाषा विषय के अनुरूप तत्समप्रधान है लेकिन इतनी दुरूह नहीं कि सम्प्रेषण में कठिनाई हो। उन्होंने अपनी कविता को इस गद्यात्मकता से बचाया है। प्रकृति के सहज बिम्बों में कविता को सहजता और व्यंजकता प्रदान की है। ऐसी कविताओं में प्रायः सपाट कथनों की भरमार होने की आशंका होती है, मगर यहां प्रकृति के चित्रों ने उस आशंका से कविता को मुक्त कर दिया है। यह कवि-कर्म के प्रति कवि की गंभीरता का ही परिचायक है। उदाहरण के लिए 'मुक्तिपथ' शीर्षक कविता की निम्नांकित पंक्तियां दृष्टव्य हैंः-

सूर्य की एक रूपहली किरण
अपनी हथेलियों पर बैठा
हमें घुमा सकती
चराचर जगत में
जो जान लेता एक पत्ते की यात्रा
ब्रहाण्ड नाप लेता
(पृष्ठ-84)

मैं विस्तार में न जाते हुए हर उस पाठक से इस संग्रह को पढ़ने की अनुशंसा करूंगा ,जिनमें अब भी मानवता बची है, जैसे बची रहती है रेत के नीचे भी कहीं-कहीं नमी। पढ़ेंगे तो हो सकता है वह नमी किसी दिन नदी में बदल जाए। कवि को बधाई, बहुत-बहुत बधाई। ■